कला वस्तु के प्रति भावात्मक अनुभूति को उत्पन्न कर आत्मिक सुख प्रदान करता है। ब्रह्मा द्वारा रचित इस सृष्टि में किसी भी देश की संस्कृति का सम्यक् ज्ञान वहाँ की ललित कलाओं से होता है। भारत की ललित कलाओं का अपना अलग महत्व है।

चित्रकला सभी कलाओं में श्रेष्ठ है यह, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देने वाली है जैसे - पर्वतों में सुमेरु श्रेष्ठ है, पक्षियों में गरुड़ प्रधान है और मनुष्यों में राजा उत्तम है उसी प्रकार कलाओं में चित्रकला उत्कृष्ट है।

चित्रकला का इतिहास—

चित्रकला का इतिहास उतना ही पुराना कहा जा सकता है, जितना कि मानव सभ्यता के विकास का इतिहास। सत्य तो यह है कि चित्र बनाने की प्रवृत्ति सर्वदा से ही हमारे पूर्वजों

में विद्यमान रही है। मनुष्य ने जिस समय प्रकृति की गोद में आँख खोली, उस समय से ही उसने अपनी मूक भावनाओं को अपनी तूलिका द्वारा ऊँची - नीची रेखा - कृतियों के माध्यम से गुफाओं और चट्टानों की भित्तियों पर अंकित कर अभिव्यक्त किया। अपना सांस्कृतिक विकास करने के लिए मानव ने जिन साधनों को अपनाया, उनमें चित्रकला भी एक साधन थी।

भारतीय चित्रकला का उद्गम भी प्रागैतिहासिक काल से ही माना जाता है। समय के साथ - साथ ज्यों - ज्यों मानव ने विकास किया, भारत में यह कला भी अपने उत्कर्ष को प्राप्त करती रही। वस्तुतः भारतीय चित्रकला की प्रधानता को इन अनेक विद्वानों ने स्वीकार किया है तथा विश्व में उसकी एक विशिष्ट पहचान है।